तुम अपनी जान दया कर, धनी लेवे त्यों लई खबर।
माया गम सास्त्रों मांहें, सो त्रिगुन भी समझत नाहें।। ३ ।।

आपने अपनी अंगना जानकर ऐसे कृपा की है जैसे धनी अपनी पत्नी की खबर लेते हैं। शास्त्रों में माया के विस्तार का वर्णन है। इसको ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी समझ नहीं पाए।

सो तारतम केहे करी रोसन, और देवाई साख सास्त्रों वचन।
हम मांग लई जो माया, सो पेहेचान के खेल देखाया।। ४ ।।

आपने कृपा करके तारतम वाणी से सब भेद जाहिर कर दिया है। सभी शास्त्रों से गवाही दे-देकर हमने जिस माया को मांगा, उसकी पहचान कराकर खेल दिखाया।

उमेद करी जो सैयन, सो इत आए करी पूरन।
तुम उमेद करते मने किए, तो भी खेल देखाए सुख दिए।। ५ ।।

ब्रह्मसृष्टियों ने धाम में जो चाहना की थी, वह यहां आकर सब पूरी कर दी। आपने तो खेल देखने के लिए मना किया था, फिर भी हमारी चाहना के अनुसार खेल दिखाकर सुख दिया।

हमको खेल देखन की लागी रढ, सो इत आए देखाई कर मन द्रढ।
तुम हमको खेल देखावन काज, हमसों आगे आए श्री राज।। ६ ।।

हमको खेल देखने की बड़ी धुन लगी थी। उन्होंने यहां आकर हमें दृढ़ता देकर खेल दिखाया। हमको खेल दिखाने के लिए हमसे पहले आप (श्री राज) पधारे।

तुम बिना लाड़ पूरन कौन करे, इन माया में दूजी बेर देह कौन धरे।
तुम मोसों गुन किए अनेक, सो चुभे मेरे हिरदे में लेख।। ७ ।।

आपके बिना हमारे लाड़ (चाहना) कौन पूरे करेगा और हमारे लिए इस माया में आपके बिना कौन दूसरी बार तन धारण कर आएगा? आपने मेरे पर बहुत कृपा की है। वह मुझे अच्छी तरह याद है।

तुम पर वार डारूं जीवसो देह, तुम किए मोसों अधिक सनेह।
मैं वारने लेऊं तुम पर, मैं सुरखरु होऊंगी क्यों कर।। ८ ।।

आपने मेरे से इतना अधिक प्यार किया कि अब मैं आप पर जीव और तन कुर्बान कर दूं। मैं बार-बार आप पर न्योछावर होती हूं, वरन् मैं आपके सामने कैसे खड़ी होऊंगी?

तुम हो हमारे धनी, तो पूरी आसा लाख गुनी।
इंद्रावती चरनों लागे, कृपा करो तो जागी जागे।। ९ ।।

आप हमारे प्रीतम हो, इसलिए आपने हमारी आशाओं को लाख गुना अधिक पूरा किया। अब श्री इन्द्रावतीजी चरणों में लगकर कहती हैं, हे धनी ! अब आप कृपा करें तो हम सब जाग जाएं।

॥ प्रकरण ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ ३७१ ॥

अखंड दंडवत करूं परनाम, हैड़े भीड़के भानूं हाम।
प्रेमें देऊं प्रदखिना, बेर बेर अनेक अति घना।। १ ।।

हे धनी ! मैं आपके चरणों में प्रणाम कर और आपसे चिपटकर अपनी चाहना मिटाऊं तथा अनेक बार प्रेम से आपकी परिकरमा करूं।

Nijanand App

बल बल जाऊं मुखारके बिंद, वरनन करूं सरूप सनंध।
वारने जाऊं नैनों पर, देखत हो सीतल द्रष्ट कर।। २ ।।

आपके स्वरूप पर मैं बलिहारी जाती हूं, आपके स्वरूप की शोभा का वर्णन करती हूं। आपके नैनों पर मैं बलिहारी जाती हूं, जिनसे आप नजर-ए-करम करते हैं।

वारने ऊपर लेऊं वारने, सुख दिए मोको अति घने।
बेर बेर मैं लागूं पाए, सेवा करूं हिरदे चित ल्याए।। ३ ।।

आपने मुझे अत्यधिक सुख दिए हैं, इसीलिए आप पर बलिहारी जाती हूं। बार-बार आपके चरणों में लगकर बड़ी सावचेत होकर आपकी सेवा करूं।

वार फेर डारूं मेरी देह, इंद्रावती कहे अधिक सनेह।
बोहोत अस्तुत मैं जाए ना कही, अपने घर की बात जो भई।। ४ ।।

श्री इन्द्रावतीजी बड़े प्रेम से कहती हैं कि मैं अपने तन मन को आप पर न्योछावर करती हूं। मुझे अधिक स्तुति का ढंग नहीं आता, क्योंकि यह तो पति-पत्नी का नाता है।

अपनी बड़ाई आप मुख होए, ताको मूरख कहे सब कोए।
पर जैसी बात तैसा बरनन, करसी विचार चतुर अति घन।। ५ ।।

यदि कोई अपनी बड़ाई स्वयं करता है तो उसे लोग मूर्ख कहते हैं, परन्तु जैसे का तैसे वर्णन करना चतुर और विचारशील व्यक्तियों से हो सकता है।

वचन धनी के कहे परवान, प्रगट लीला होसी निरवान।
चौदे भवन का कहिए सूर, रास प्रकास उदे हुआ नूर।। ६ ।।

धनी के कहे वचनों के अनुसार अब निश्चित ही यह लीला जाहिर होगी। अब जो रास और प्रकास (प्रकाश) का ज्ञान आ गया है, यह चौदह लोकों को उजाला देगा।

चौदे भवन में जोत न समाए, ए नूर किरना किने पकड़ी न जाए।
सब्दातीत ब्रह्मांड किए प्रकास, देखसी साथ एह उजास।। ७ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में इस तारतम वाणी के ज्ञान के प्रकाश को कोई रोक न सकेगा। इस वाणी ने अक्षर और अक्षरातीत को जाहिर कर दिया है। उस उजाले को सुन्दरसाथ देखेगा।

प्रकास के वचन निरधार, वचन सब करसी विचार।
आगे बड़ो होसी विस्तार, अखंड सब होसी संसार।। ८ ।।

प्रकाश की वाणी ऐसी सत (सत्य) है कि इसको सब कोई देखेगा। आगे चलकर इसका बड़ा भारी विस्तार होगा, जिससे सारा संसार अखण्ड होगा।

इन लीला को करसी विचार, क्या करसी ताको संसार।
प्रगट नीउ बांधी है एह, बड़ी इमारत होसी जेह।। ९ ।।

इस लीला को जो विचार करेगा, उसका संसार कुछ बिगाड़ न पाएगा। इस वाणी ने बड़ी पक्की नींव बांधी है, जिस पर बड़ी भारी इमारत बनेगी, अर्थात् अभी तो थोड़ी किरणें ही निकली हैं। इस तेज से ही ब्रह्माण्ड अखण्ड होगा।

Nijanand App

सुनो वचन ब्रह्मसृष्टी जाग, इंद्रावती कहे चरनों लाग।
ए बानी मेरे धनिऐं कही, फेर फेर तुमको कृपा भई।। १० ।।

सुन्दरसाथजी ! श्री इन्द्रावतीजी आपके चरणों में लगकर कहती हैं कि आप जागकर इस वाणी को सुनो और ध्यान में रखो। यह वाणी मेरे धनी ने कही है और बार-बार आप पर कृपा की है।

ऐसा पकव प्रवीन ना कछू हूं, तो सिखापन तुमको क्यों देऊं।
मैं मन में यों जान्या सही, जीव अपना समझाऊं रही।। ११ ।।

मैं कोई ऐसी विद्वान नहीं हूं जो आपको सिखापन (शिक्षा) दूं। मैंने यह समझा कि मैं अपने ही जीव को समझा रही हूं।

पर साथ ऊपर दया अति घनी, फेर फेर कृपा करत हैं धनी।
तो वचन तुमको कहे जांए, ना तो चींटी मुख कुम्हड़ा न समाए।। १२ ।।

लेकिन सुन्दरसाथ पर श्री राजजी की अति कृपा है और इसीलिए बार-बार कृपा करते हैं, नहीं तो चींटी के मुख में कद्दू (पेठा) नहीं जा सकता है। धनी के वचन भारी हैं और जीव चींटी के समान है।

जिन तुम वचन विसारो एक, कारन साथ कहे विसेक।
वचन कहे हैं कीजो त्यों, आपन पेहेले पांउ भरे हैं ज्यों।। १३ ।।

हे सुन्दरसाथजी! आपके लिए ही श्री राजजी महाराज ने यह विशेषकर वाणी कही है। इसके एक वचन को भी मत भूलना। हमने जिस रास्ते पर पहले चलकर बताया (बृज से रास में जाते समय) था, उसी प्रकार अब भी राजजी के वचनों के अनुसार चलना।

फेर अवसर आयो है हाथ, चरने लाग केहेती हूं साथ।
अब चरने लागूं धनी चितधरी, तुम खबर मेरी भली बिध करी।। १४ ।।

हे साथजी ! आपके चरणों लगकर कहती हूं कि यह दुबारा मौका अपने हाथ आया है। हे धनी ! मैं आपके चरणों में आपका स्वरूप लेकर प्रणाम करती हूं। आपने हमारी अच्छी खबर ली।

ए माया बोहोत जोरावर हती, दूर करी मेरे प्राणपति।
मायाको तजारक भई, तिन कारन ए विनती कही।। १५ ।।

यह माया बहुत ताकतवर थी, जिसको मेरे प्राणनाथ ने ही दूर किया तथा माया को ठोकर मारी। इस कारण धनी से यह विनती की है।

ए विनती सुनियो तुम सार, माया दुख पायो निरधार।
ए माया बातें हैं अति घनी, मोहे मुखथें काढ़ी मेरे धनी।। १६ ।।

यह विनती हमारी बातों का सार है कि हमने माया में कितने दुःख उठाए हैं। इस माया की बातें तो बहुत अधिक हैं। मुझे इसके मुख से मेरे धनी ने ही निकाला है।

तुमारे गुन की कहा कहूं बात, तुम लाड़ पूरे करके अपन्यात।
पिउ ने अपनी जानी परवान, इंद्रावती चरने राखी निरवान।। १७ ।।

हे धनी ! आपके एहसानों का कहां तक वर्णन करूं? आपने अपनी जानकर मेरे सारे लाड़ (इच्छाएं) पूरे किए हैं। श्री इन्द्रावतीजी को निश्चित ही आपने अपना जानकर चरणों में रखा है।

Nijanand App

श्री सुंदरबाई के चरन पसाए, मूल वचन हिरदे चढ़ आए।
चरन फले निध आई एह, अब ना छोडूं चित चरन सनेह।। १८ ।।

श्री श्यामा महारानीजी के चरणों की कृपा से परमधाम के मूल वचन याद आ गए हैं। इन चरणों की कृपा से मुझे यह न्यामत मिली है। अब किसी तरह से भी राजजी के चरणों को नहीं छोडूंगी।

चरन तले कियो निवास, इंद्रावती गावे प्रकास।
भान के भरम कियो उजास, पावे फल कारन विश्वास।। १९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी श्री राजजी के चरणों का सहारा लेकर प्रकाश की वाणी को जाहिर करती हैं तथा संशय मिटाकर ज्ञान का उजाला करती हैं। वाणी पर जिनका जैसा विश्वास है, उनको वैसा ही फल मिलता है।

विश्वास करके दौड़े जे, तारतम को फल सोई ले।
तिन कारन करों प्रकास, ब्रह्मसृष्टी पूरन करूं आस।। २० ।।

जो इस वाणी पर विश्वास करके चलता है, तारतम का फल उसी को ही मिलता है। इस वास्ते वाणी को जाहिर कर ब्रह्मसृष्टि की इच्छाओं को पूर्ण करूंगी।

इंद्रावती धनी के पास, रास को कियो प्रकास।
धनिऐं दई मोहे जाग्रत बुध, तो प्रकास करूं तारतमकी निध।।२१।।

श्री इन्द्रावतीजी ने धनी की कृपा से ही अखण्ड रास को जाहिर किया है। इन्हें धनी की कृपा से जागृत बुद्धि मिली है। अब उसके प्रकाश से तारतम वाणी को जाहिर करती हूं!

॥ प्रकरण ॥ १९ ॥ चौपाई ॥ ३९२ ॥

गुणों को धनी की तरफ लगाना

अब करूं अस्तुत आधार, वल्लभ सुनो विनती।
एते दिन मैं ना पेहेचाने, मोहे लेहेर माया जोर हुती।। १ ।।

हे मेरे धनी ! आपकी वन्दना करती हूं। आप मेरी विनती सुनें। आज तक मैंने आपको पहचाना नहीं था। मैं माया में मग्न थी।

भानूं भरम मोह जो मूलको, लेऊं सो जीव जगाए।
करूं अस्तुत पियाकी प्रगट, देऊं सो पट उड़ाए।। २ ।।

मैं मूल से ही मोह के संशय को मिटाती हूं और जीव को जगाती हूं। सामने पड़े मोह के परदे को पिया की वन्दना कर उड़ा देती हूं।

सोभा पिउ की सब्दातीत, सो आवत नहीं जुबांए।
जोगवाई जेती इन अंग की, सो सब मूल प्रकृती मांहें।। ३ ।।

पिया की शोभा बेहद की है, जिसका जबान से वर्णन होता नहीं है। मेरे तन की जितनी भी शक्तियां हैं, वह सब माया की ही हैं।

Nijanand App